

पद १८०

(राग: झिंजोटी - ताल: दादरा)

खुदा के वास्ते मुझ में खुदा बता देना। ये मैं का गफलत परदा
जरा उठा लेना ॥१॥ ये नूर किसका है हर चश्म में चमकता है।
रसूल, महल मुबारक तवाफ कर लेना ॥२॥ तुम्हे नसीब हो मेराज
शबे मुबारक हो। ये जिब्रइल है दिल आपसा बना लेना ॥३॥ वो
लाशरीक हूँ अल्लाह में खुद फना भी फना है। ये जोश वस्ल
निशाने खुदी मिटा देना ॥४॥ न बंदा हूँ न मानिक हर रंग मे खुदा
ही खुदा है। फकीर सूफी का नाजुक बयान सुन लेना ॥५॥